अध्याय-चतुर्थ

प्रदत्तों का विश्लेषण, परिणाम एवं व्याख्या

अध्याय–चतुर्थ

प्रदत्तों का विश्लेषण, परिणाम एवं व्याख्या

4.1 भूमिका

संग्रहित प्रदत्तों का विश्लेषण, सारणीयन तथा प्रस्तुतीकरण आदि अनुसंधान कार्य का महत्वपूर्ण अंग है। जिसें प्रयुक्त किये बिना शोधकार्य विधिवत् प्रस्तुत करना संभव नहीं हैं।

पी.वी. युंग कहते है " संकलित तथ्यों के उचित सस्थिति संबंधों के रूप में व्यवस्थित कर विचारपूर्ण आधारशिला की स्थापना करना ही विश्लेषण है, अर्थात् शोध का सृजनात्मक पक्ष है"

प्रस्तुत अध्याय में उचित सांख्यकीय विधियों का उपयोग करके प्राप्त प्रदत्तों का विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है इस शोध अध्ययन में कुल 7 परिकल्पनाएँ रखी गई है। जिसकी जाँच करने के उपरांत त्वरित प्रदत्तों के निरंतर प्रस्तुतीकरण के लिए शोध समस्या के अध्ययन से निकले परिणाम की व्याख्या की गई।

4.2 प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या– (प्रश्नावली के आधार पर)

प्रस्तुत अध्याय में प्रदत्तों की जानकारी की विस्तृत विश्लेषण किया तथा विश्लेषण के आधार पर परिणामों की विस्तृत व्याख्या की गई हैं।

कक्षा नौवीं के विद्यार्थियों के लिए प्रश्नावली के प्राप्त उत्तरों की आधार पर सारणीयन निम्नलिखित प्रकार से किया।

भाग – 1

परिकल्पना – 1

भाषा संबधी त्रुटियों का हिन्दीभाषा अधिगम उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

तालिका क्रमांक – 4.2.1

विद्यार्थियों की हिन्दीभाषा अधिगम उपलब्धि पर भाषा संबंधी त्रुटियों का प्रभाव का 'एफ' अनुपात की तुलना

परीक्षण	प्रसरण स्त्रोंत	वर्ग योग	मुक्तांश	औसत वर्ग	एफ अनुपात	सार्थकता
प्रथम सत्र	समुहों के मध्य	4230.533	2	2115.266	44.13	< 0.01
	समुहों के अन्तर्गत	3786.812	79	47.934		
	कुल	8017.344	81			
द्वितीय सत्र	समुहों के मध्य	1387.213	2	693.606	33.62	< 0.01
	समुहों के अन्तर्गत	1629.677	79	20.629		
	कुल	3016.890	81			
तृतीय सत्र	समुहों के मध्य	3376.854	2	1688.427	25.55	< 0.01
	समुहों के अन्तर्गत	5520.436	79	66.081		
	कुल	8597.290	81			

तालिका क्र. 4.2.1 से यह स्पष्ट होता है कि 'एफ' का मान 0.01 स्तर पर सार्थक है, अतः परिकल्पना को अस्वीकृत किया जाता है, अर्थात विभिन्न स्तर यानि उच्च, मध्यम तथा निम्न भाषा त्रुटि रखने वाले छात्रों की भाषा उपलब्धि में सार्थक अंतर हैं। अतः यह कहा जाता है कि भाषा संबंधी त्रुटियों का हिन्दीभाषा अधिगम उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।

परिकल्पना – 2

भाषा संबंधी व्यावहारिक व्याकरण की त्रुटियों का हिन्दीभाषा अधिगम उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

तालिका क्रमांक – 4.2.2

विद्यार्थियों की हिन्दीभाषा अधिगम उपलब्धि पर भाषासंबंधी व्यावहारिक व्याकरण त्रुटियों का प्रभाव का 'एफ' अनुपात की तुलना

परीक्षण	प्रसरण स्त्रोंत	वर्ग योग	मुक्तांश	औसत वर्ग	एफ अनुपात	सार्थकता
प्रथम सत्र	समुहों के मध्य	3571.110	15	238.074	3.53	< 0.01
	समुहों के अन्तर्गत	4446.235	66	67.367		
	कुल	8017.344	81			
द्वितीय सत्र	समुहों के मध्य	1443.132	15	96.209	4.04	< 0.01
	समुहों के अन्तर्गत	1573.758	66	23.845		
	कुल	3016.890	81			
तृतीय सत्र	समुहों के मध्य	3270.407	15	218.027	2.70	< 0.01
	समुहों के अन्तर्गत	5326.883	66	80.710		
	कुल	8597.290	81			

तालिका क्र. 4.2.2 से यह स्पष्ट होता है कि 'एफ' का मान 0.01 स्तर पर सार्थक है, अतः परिकल्पना को अस्वीकृत किया जाता है, अर्थात विभिन्न स्तर यानि उच्च, मध्यम तथा निम्न व्यावहारिक व्याकरण भाषा त्रुटि रखने वाले छात्रों की भाषा उपलब्धि में सार्थक अंतर हैं। अतः यह कहा जाता है कि भाषा संबंधी व्यावहारिक व्याकरण त्रुटियों का हिन्दीभाषा अधिगम उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।

परिकल्पना – 3

भाषा संबंधी पत्रलेखन की त्रुटियों का हिन्दीभाषा अधिगम उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

तालिका क्रमांक – 4.2.3

विद्यार्थियों की हिन्दीभाषा अधिगम उपलब्धि पर भाषा संबंधी पत्रलेखन की त्रुटियों का प्रभाव का 'एफ' अनुपात की तुलना

परीक्षण	प्रसरण स्त्रोंत	वर्ग योग	मुक्तांश	औसत वर्ग	एफ अनुपात	सार्थकता
प्रथम सत्र	समुहों के मध्य	931.279	7	133.040	1.39	> 0.05
	समुहों के अन्तर्गत	7086.066	74	95.758		
	कुल	8017.344	81			
द्वितीय सत्र	समुहों के मध्य	318.277	7	45.468	1.25	> 0.05
	समुहों के अन्तर्गत	2698.613	74	36.468		
	कुल	3016.890	81			
तृतीय सत्र	समुहों के मध्य	916.719	7	130.960	1.26	>0.05
	समुहों के अन्तर्गत	7680.571	74	103.791		
	कुल	8597.290	81			

तालिका क्र. 4.2.3 से यह स्पष्ट होता है कि 'एफ' का मान 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं हैं। अतः परिकल्पना को स्वीकृत किया जाता है। अर्थात विभिन्न स्तर यानि उच्च, मध्यम तथा निम्न पत्रलेखन की भाषा त्रुटि रखने वाले छात्रों की भाषा उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं है। अतः यह कहा जाता है कि भाषा संबंधी पत्रलेखन की त्रुटियों का हिन्दीभाषा अधिगम उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

परिकल्पना – 4

भाषा संबंधी निबंधलेखन की त्रुटियों का हिन्दीभाषा अधिगम उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

तालिका क्रमांक – 4.2.4

विद्यार्थियों की हिन्दीभाषा अधिगम उपलब्धि पर भाषा संबंधी निबंध लेखन की त्रुटियों का प्रभाव का 'एफ' अनुपात की तुलना

परीक्षण	प्रसरण स्त्रोंत	वर्ग योग	मुक्तांश	औसत वर्ग	एफ अनुपात	सार्थकता
प्रथम सत्र	समुहों के मध्य	1607.856	2	803.728	9.91	< 0.01
	समुहों के अन्तर्गत	6409.488	79	81.133		
	कुल	8017.344	81			
द्वितीय सत्र	समुहों के मध्य	670.390	2	335.195	11.29	< 0.01
	समुहों के अन्तर्गत	2346.500	79	29.703		
	कुल	3016.890	81			
तृतीय सत्र	समुहों के मध्य	1385.145	2	692.572	7.59	< 0.01
	समुहों के अन्तर्गत	7212.145	79	91.293		
	कुल	8597.290	81			

तालिका क्र. 4.2.4 से यह स्पष्ट होता है कि 'एफ' का मान 0.01स्तर पर सार्थक है। अतः परिकल्पना को अस्वीकृत किया जाता है। अर्थात् विभिन्न स्तर यानि उच्च, मध्य, निम्न निबंध लेखन की भाषा त्रुटि रखने वाले छात्रों की भाषा उपलब्धि में सार्थक अंतर है। अतः यह कहा जाता है कि भाषा संबंधी निबंधलेखन की त्रुटियों का हिन्दीभाषा अधिगम उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।

परिकल्पना – 5

भाषा संबंधी अनुवाद लेखन की त्रुटियों का हिन्दी भाषा अधिगम उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

तालिका क्रमांक – 4.2.5

विद्यार्थियों की हिन्दी भाषा अधिगम उपलब्धि पर भाषा संबंधी अनुवाद लेखन की त्रुटियों का प्रभाव का 'एफ' अनुपात की तुलना।

परीक्षण	प्रसरण स्त्रोंत	वर्ग योग	मुक्तांश	औसत वर्ग	एफ अनुपात	सार्थकता
प्रथम सत्र	समुहों के मध्य	1282.387	2	641.193	7.52	< 0.01
	समुहों के अन्तर्गत	6734.957	79	85.253		
	कुल	8017.344	81			
द्वितीय सत्र	समुहों के मध्य	329.919	2	164.959	4.85	< 0.01
	समुहों के अन्तर्गत	2686.972	79	34.012		
	कुल	3016.890	81			
तृतीय सत्र	समुहों के मध्य	851.369	2	425.684	4.34	< 0.01
	समुहों के अन्तर्गत	7745.921	79	98.050		
	कुल	8597.290	81			

तालिका क्रमांक– 4.2.5 से यह स्पष्ट होता है कि 'एफ' का मान 0.01 स्तर पर सार्थक है। अतः परिकल्पना को अस्वीकृत किया जाता है, अर्थात् विभिन्न स्तर यानि उच्च, मध्यम तथा निम्न अनुवाद लेखन की भाषा त्रुटि रखने वाले छात्रों की भाषा उपलब्धि में सार्थक अंतर है। अंत यह कहा जाता है कि, भाषा संबंधी अनुवाद लेखन की त्रुटियों का हिन्दी भाषा अधिगम उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।

परिकल्पना – 6

बालक एवं बालिकाओं का हिन्दी भाषा अधिगम में होनेवाली त्रुटियों में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

तालिका क्रमांक – 4.2.6

बालक एवं बालिकाओं की हिन्दीभाषा अधिगम में होनेवाली त्रुटियों का 'टी' मूल्य की तुलना

वर्ग	मध्यमान	मानक विचलन	संख्या	स्वतंत्रता की कोटी	टी का मान	सार्थकता
बालक	23.54	11.57	41	80	2.4	<0.05
बालिका	17.73	10.25	41			

स्वतंत्रता की कोटी 80 (d.f)

उपरोक्त तालिका क्रमांक – 4.2.6 से स्पष्ट होता है कि बालक एवं बालिकाओं की कुल संख्या 82 हैं। जिसमें बालकों का मध्यमान 23.54, मानक विचलन 11.57 है। बालिकाओं का मध्यमान 17.73, मानक विचलन 10.25 है। दोनों की स्वतंत्रता कोटी 80 है। और टी मान 2.4 है।

तालिका में टी मान 2.4 हैं जो की सारणी मूल्य 0.05 स्तर पर सार्थक है। परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है। अंतः बालक एवं बालिकाओं का हिन्दीभाषा अधिगम में होनेवाली त्रुटियों में सार्थक अंतर पाया जाता हैं।

बालक एवं बालिकाओं का हिन्दीभाषा के अधिगम में होनेवाली त्रुटियों के घटकों का 'टी' मूल्य की सार्थकता

तालिका क्रमांक– 4.2.7

क्रमांक	घटक	टी. का मान	सार्थकता
1.	व्यावहारिक व्याकरण	.45	> 0.05
2.	पत्रलेखन	1.20	>0.05
3.	निबंध लेखन	2.64	<0.01
4.	अनुवाद लेखन	.20	>0.05

उपरोक्त तालिका क्रमांक 4.2.7 से यह ज्ञात होता है कि 'टी' का मान 0.01 स्तर पर निबंधलेखन की लेखन त्रुटियों में सार्थक है। इसलिए बालक एवं बालिकाऐं निबंधलेखन की त्रुटियों में भिन्न है। बालक का मध्यमान (11.097), बालिकाओं के मध्यमान (6.59) से अधिक है, इसलिए यह सूचित होता है कि बालक जो है वह बालिकाओं से निबंधलेखन की त्रुटियाँ अधिक करता है।

'टी' का मान पत्रलेखन, व्यावहारिक व्याकरण, एवं अनुवाद लेखन की त्रुटियों के लिए सार्थक नहीं है।

परिकल्पना – 7

शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों का हिन्दीभाषा अधिगम में होनेवाली त्रुटियों में सार्थक अन्तर नहीं पाया जायेगा।

तालिका क्रमांक – 4.2.8
शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों का हिन्दीभाषा अधिगम में होनेवाली त्रुटियों का 'टी' मूल्य की तुलना

वर्ग	मध्यमान	मानक विचलन	संख्या	स्वतंत्रता की कोटी	टी का मान	सार्थकता
शहरी	17.61	11.50	41	80	2.51	<0.05
ग्रामीण	23.66	10.27	41			

स्वतंत्रता की कोटी 80 (d.f)

उपरोक्त तालिका क्रमांक – 4.2.7 से स्पष्ट होता है कि ग्रामीण तथा शहरी के कुल 82 विद्यार्थी हैं। जिसमें शहरी छात्र–छात्राओं का मध्यमान 17.61 मानक विचलन 11.50 है। ग्रामीण छात्र–छात्राओं का मध्यमान 23.66 मानक विचलन 10.27 है। दोनों की स्वतंत्रता कोटी 80 है। और टी मान 2.51 है।

तालिका में टी मान 2.51 हैं जो की सारणी मूल्य 0.05 स्तर पर सार्थक है। परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है। अंतः शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों का हिन्दी भाषा अधिगम में होनेवाली लेखन त्रुटियों में सार्थक अन्तर पाया जाता हैं।

त्रुटियों के घटकों का 'टी' मूल्य की सार्थकता

तालिका क्रमांक- 4.2.9

क्रमांक	घटक	टी. का मान	सार्थकता
1.	व्यावहारिक व्याकरण	1.749	> 0.05
2.	पत्रलेखन	3.31	>0.05
3.	निबंध लेखन	1.919	>0.05
4.	अनुवाद लेखन	4.896	<0.01

उपरोक्त तालिका क्रमांक- 4.2.9 से यह ज्ञात होता है कि 'टी' का मान 0.01 स्तर पर अनुवाद लेखन की त्रुटियों में सार्थक है। शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों का अनुवाद लेखन की त्रुटियों में भिन्न है। शहरी विद्यार्थियों का मध्यमान (17.61) ग्रामीण विद्यार्थियों का मध्यमान (23.61) हैं, जो की शहरी विद्यार्थियों के मध्यमान से ग्रामीण विद्यार्थियों का मध्यमान अधिक है। इसलिए यह सूचित होता है कि ग्रामीण विद्यार्थी शहरी विद्यार्थियों से अनुवाद लेखन में अधिक त्रुटियाँ करते है।

'टी' का मान पत्रलेखन, व्यावहारिक व्याकरण, एंव [illegible] के लिए सार्थक नहीं है।

भाग –2

4.3 गुणात्मक विवरण

विद्यार्थी लेखन करते समय कहीं प्रकार की त्रुटियाँ करते है, इसलिए शोधकर्ता ने प्रस्तुत अध्ययन में व्याकरण, अनुवाद लेखन, पत्रलेखन, निबंधलेखन पर आधारित तथ्यों की मद्द से प्रश्नपत्र बनाया और इसी के आधार पर कुछ निम्नलिखित त्रुटियाँ को पाया।

- **विरामचिह्न की त्रुटि–**

विराम का शाब्दिक अर्थ होता है, ठहराव। विद्यार्थी हिन्दी में प्रयुक्त निम्नलिखित विरामचिह्नों की त्रुटियाँ करते है,

तालिका क्रमांक– 4.3.1

विराम चिह्न की त्रुटि

क्र.	विराम चिह्न के प्रकार	चिह्न	होने वाली त्रुटि	प्रतिशत
1.	पूर्ण विराम	।	बच्चें एक साथ चिल्ला उठे?	12 %
2.	अल्पविराम	,	आप बड़े है 'सयाने है अक्लमंद है' ''आप बड़े है सयाने है अक्लमंद है'' आप बडे है सयाने है; अक्लमंद है''	60 %
3.	अर्द्ध विराम	;	रामू नही माना; उसने पैसे माँगे मैने नही माँगे। रामू नही माना, उसने पैसे माँगे, मैंने नही माँगे। रामू नही माना ''उसने पैसे माँगे मैने नही माँगे''	70%
4.	प्रश्नवाचक चिह्न	?	संदीप कहाँ है, कैसा है वह, सदीप कहाँ है 'कैसा है वह'	10%
5.	विस्मयादिबोधक चिह्न	!	वाह कितना अच्छा मौसम है? वाह, कितना अच्छा मौसम है	40%

1. **पूर्ण विराम–**

पूर्ण विराम का अर्थ पूरी तरह रूकना। विद्यार्थी लेखन करते समय वाक्य या पद के विचारपूर्ण होने से पहले पूर्ण विराम लगा देते है। कभी–कभी विद्यार्थी अल्पविराम तथा अर्द्धविराम के जगह पर पूर्ण विराम लगा देते हैं।

जैसे कि उपरोक्त तालिका क्रमांक– 4.3.1 में दिखाया गया है। यह त्रुटि विद्यार्थियों की लेखन में पायी गयी है।

2. **अल्पविराम–**

अल्पविराम का अर्थ है कि, वाक्य में बार–बार रूकना। कभी–कभी विद्यार्थी अल्पविराम की जगह अर्द्धविराम चिह्न लगा देते है। कभी तो विद्यार्थी अल्पविराम का चिह्न लगाना ही भूल जाता है।

जैसे कि उपरोक्त तालिका क्रमांक– 4.3.1 में दिखाया गया है। यह त्रुटि विद्यार्थियों की लेखन में पायी गयी है।

3. **अर्द्धविराम–**

अर्द्धविराम का अर्थ है कि, थोड़ी देर के लिए रूकना। विद्यार्थी लेखन करते समय अर्द्धविराम चिह्न के स्थान का परिवर्तन करते हैं या तो अल्पविराम चिह्न का प्रयोग करतें है।

जैसे कि उपरोक्त तालिका क्रमांक– 4.3.1 में दिखाया गया है। यह त्रुटि विद्यार्थियों की लेखन में पायी गयी है।

4. **प्रश्नवाचक चिह्न–**

प्रश्नवाचक चिह्न का प्रयोग प्रश्नसूचक वाक्य के अंत में किया जाता है– विद्यार्थी लेखन करते समय कभी–कभी अनावश्यक चिह्न लगा देता है।

जैसे कि उपरोक्त तालिका क्रमांक– 4.3.1 में दिखाया गया है। यह त्रुटि विद्यार्थियों की लेखन में पायी गयी है।

5. **विस्मायादिबोधक–**

यह चिह्न विस्मय (आश्चर्य आदि) का बोध कराने वाले दो पदबंधों अथवा वाक्यों में आता है। कभी–कभी विद्यार्थी लेखन करते समय विस्मायादिबोधक की जगह प्रश्नार्थ या अल्पविराम लगा देते है।

जैसे कि उपरोक्त तालिका क्रमांक– 4.3.1 में दिखाया गया है। यह त्रुटि विद्यार्थियों की लेखन में पायी गयी है।

निष्कर्ष–

रूप से यह देखा जाय तो ज्यादातर विद्यार्थी अल्पविराम तथा अर्द्धविराम चिह्न का प्रयोग करने के समय करते है।

तथा पूर्ण विराम, प्रश्नवाचक चिह्न, विस्मयादिबोधक चिह्न में विद्यार्थी कम त्रुटियाँ करते हैं।

- **बिन्दुगत त्रुटि–**

बिन्दु की त्रुटियाँ के कारण अर्थ का अनर्थ हो जाता है। हिन्दी में अनुस्वार (•), चन्द्रबिन्दु (ँ), की त्रुटि बिन्दुगत त्रुटि कहलाती हैं।

बिन्दुगत त्रुटियाँ निम्नलिखित तीन प्रकार की होती हैं।

तालिका क्रमांक- 4.3.2

बिन्दुगत त्रुटि

क्र.	बिन्दुगत त्रुटि के प्रकार	होने वाली त्रुटि	प्रतिशत
1.	बिन्दु लोप	अगना, सपादक, सम्पादक	50%
2.	बिन्दु का स्थान परिवर्तन	अगँना, सपादंक, सवांद	25 %
3.	अनावश्यक बिन्दु	आँगण, अंगनना, अंगण, आँगन, अगंन	30%

1. **बिन्दु का लोप-**

विद्यार्थी लेखन करते समय जहाँ बिन्दु की आवश्यकता है, वहाँ बिन्दु नही लगाते,

जैसे कि उपरोक्त तालिका क्रमांक- 4.3.2 में दिखाया गया है। यह त्रुटि विद्यार्थियों की लेखन में पायी गयी है।

2. **स्थान परिवर्तन-**

कई बार विद्यार्थी लेखन करते समय उपयुक्त स्थान पर बिन्दु न लगाकर अन्य स्थान पर लगा देते हैं।

जैसे कि उपरोक्त तालिका क्रमांक- 4.3.2 में दिखाया गया है। यह त्रुटि विद्यार्थियों की लेखन में पायी गयी है।

3. **अनावश्यक बिन्दु-**

विद्यार्थी कभी-कभी अनुचित स्थान पर बिन्दु लगा देते है।

जैसे कि उपरोक्त तालिका क्रमांक- 4.3.2 में दिखाया गया है। यह त्रुटि विद्यार्थियों की लेखन में पायी गयी है।

निष्कर्ष-

निष्कर्ष रूप से यह कहाँ जायेगा कि- बिन्दुलोप में विद्यार्थी त्रुटियाँ अधिक करते हैं। बिन्दु का स्थान तथा अनावश्यक बिन्दु का प्रयोग में विद्यार्थी कम त्रुटियाँ करते है।

- **मात्रासंबंधी त्रुटि–**

हिन्दी में कुल मिलाकर 10 प्रकार की मात्राऐं होती है ा, ि, ी, ु, ू, े, ै, ो,ौ, लेखन करते समय विद्यार्थियों द्वारा अग्रलिखित प्रकार की त्रुटि करना मात्रात्मक संबंधी त्रुटियाँ कहलाती हैं।

तालिका क्रमांक– 4.3.3

मात्राओं की त्रुटि

क्र.	मात्राओं के प्रकार	होने वाली त्रुटि	प्रतिशत
1.	मात्राओं की लोप	बहत, खानपिना, शुक, तुम्हरी	45%
2.	अनावश्यक मात्राएँ	देगो, शोकसभों, छौडी	15%
3.	अशुद्ध मात्राएँ	लीए, मेरि, पढ़ि, खानापिना	55%
4.	स्थान परिवर्तन	सप्रमे बोहत,	10%

1. **मात्राओं का लोप–**

विद्यार्थी लेखन करते समय कई बार मात्राओं को लगाना भूल जाते है,

जैसे कि उपरोक्त तालिका क्रमांक– 4.3.3 में दिखाया गया है। यह त्रुटि विद्यार्थियों की लेखन में पायी गयी है।

2. **अनावश्यक मात्राएँ–**

विद्यार्थी प्रायः लेखन करते समय अनावश्यक रूप में भी मात्राएँ लगा देते है।

जैसे कि उपरोक्त तालिका क्रमांक– 4.3.3 में दिखाया गया है। यह त्रुटि विद्यार्थियों की लेखन में पायी गयी है।

3. **अशुद्ध मात्राएँ–**

विद्यार्थियों द्वारा लेखन करते समय कई बार अशुद्ध मात्राएँ लगाने की भूल भी हो जाती है।

जैसे कि उपरोक्त तालिका क्रमांक– 4.3.3 में दिखाया गया है। यह त्रुटि विद्यार्थियों की लेखन में पायी गयी है।

4. **स्थान परिवर्तन–**

विद्यार्थी कभी–कभी लेखन करते समय गलत स्थान पर भी मात्रा लगा देते है।

जैसे कि उपरोक्त तालिका क्रमांक– 4.3.3 में दिखाया गया है। यह त्रुटि विद्यार्थियों की लेखन में पायी गयी है।

निष्कर्ष–

निष्कर्ष रूप से यह कहाँ जा सकता है कि – मात्राओं की लोप तथा अशुद्ध मात्राओं में विद्यार्थी ज्यादातर त्रुटियाँ करते है।

- **शब्दों की त्रुटि–**

प्रायः विद्यार्थी शब्द संबंधी त्रुटि करते है। शब्द संबंधी त्रुटि निम्न प्रकार की पाई जाती है।

तालिका क्रमांक– 4.3.4

शब्दो की त्रुटि

क्र.	शब्दों की त्रुटि	होने वाली त्रुटि	प्रतिशत
1.	शब्द पुर्नरलेखन करना	बोलना बोलना, यहाँ यहा,	10%
2.	शब्द प्रतिस्थापन	बारिश–बरसात, पढ़ाई–वाचन	8%

3.	शब्द जोड़ की त्रुटि	सही – खाना खाया, त्रुटि– खाना पिना खाया, सही– बरसात हुई त्रुटि – बरसात पानी आयी	10%
4.	शब्द लोप की त्रुटि	सही– मैने कभी टिकट नहीं लिया, त्रुटि– मैने कभी नही लिया	25%

1. **शब्द पुनर्–लेखन करना–**

विद्यार्थी लेखन करते समय एक ही शब्द को या वाक्य को बार–बार लिखते है, तो इसे शब्द या वाक्य पुनर्रलेखन की त्रुटियाँ कहते है।

जैसे कि उपरोक्त तालिका क्रमांक– 4.3.4 में दिखाया गया है। यह त्रुटि विद्यार्थियों की लेखन में पायी गयी है।

2. **शब्द प्रतिस्थापन–**

विद्यार्थी अनुच्छेद, लेखन, निबंध लेखन, पत्रलेखन करते समय लिखे शब्द के स्थान को बदल कर उसके स्थान पर दूसरा तथा पर्यायवाची शब्द लिखता है तो इस तरह की त्रुटि को शब्द प्रतिस्थापन की त्रुटि कहते है। जैसे कि उपरोक्त तालिका क्रमांक– 4.3.4 में दिखाया गया है। यह त्रुटि विद्यार्थियों की लेखन में पायी गयी है।

3. **शब्द जोड़ की त्रुटि–**

विद्यार्थी लेखन करते समय दिए गए शब्द में अपनी तरफ से अतिरिक्त शब्द को जोड़ते है। इसे शब्द जोड़ना त्रुटि कहते हैं। जैसे कि उपरोक्त तालिका क्रमांक– 4.3.4 में दिखाया गया है। यह त्रुटि विद्यार्थियों की लेखन में पायी गयी है।

4. **शब्द लोप की त्रुटि-**

विद्यार्थी लेखन करते समय जल्दबाजी में कभी-कभी शब्द तथा वाक्य लिखना भूल जाते है, इस प्रकार की त्रुटियों को शब्द लोप की त्रुटि कहते है। जैसे कि उपरोक्त तालिका क्रमांक- 4.3.4 में दिखाया गया है। यह त्रुटि विद्यार्थियों की लेखन में पायी गयी है।

निष्कर्ष-

निष्कर्ष में यह देखा जाये तो शब्द लोप की त्रुटि ज्यादातर विद्यार्थी करते है। शब्द पुनर्र-लेखन करना, शब्द प्रतिस्थापन, शब्द जोड़ की त्रुटि से अधिक करते हैं।

- **अक्षर की त्रुटि-**

प्रायः विद्यार्थी अक्षर संबंधी निम्नप्रकार की त्रुटि करते हैं।

तालिका क्रमांक- 4.3.5

अक्षर की त्रुटि

क्र.	अक्षर की त्रुटि	होने वाली त्रुटि	प्रतिशत
1.	अनावश्यक अक्षर	स्वरगवासी, पंडितान,	55%
2.	अक्षर का लोप	तुम्हा....,श्या.....विद्याल...	30%
3.	स्थान परिवर्तन	संपाकद, नाकय	25%
4.	संयुक्ताक्षर की त्रुटि	कुतता, पुरसकार, समानित	60%

1. **अनावश्यक अक्षर -**

कई बार विद्यार्थी अनावश्यक अक्षर अपनी ओर से लगा देते हैं। जैसे कि उपरोक्त तालिका क्रमांक- 4.3.5 में दिखाया गया है। यह त्रुटि विद्यार्थियों की लेखन में पायी गयी है।

2. **अक्षर का लोप –**

कभी–कभी विद्यार्थी किसी अक्षर का लोप करते है।

जैसे कि उपरोक्त तालिका क्रमांक– 4.3.5 में दिखाया गया है। यह त्रुटि विद्यार्थियों की लेखन में पायी गयी है।

3. **स्थान परिवर्तन –**

कई बार विद्यार्थी अक्षर का स्थान परिवर्तन कर देते है। जैसे कि उपरोक्त तालिका क्रमांक– 4.3.5 में दिखाया गया है। यह त्रुटि विद्यार्थियों की लेखन में पायी गयी है।

4. **संयुक्ताक्षर की त्रुटि –**

संयुक्ताक्षर से तात्पर्य है, आधे अक्षर का पूर्ण से जोड़ संयुक्ताक्षर है। विद्यार्थी लेखन करते समय कभी–कभी संयुक्ताक्षर लिखने में अशुद्धियाँ करते है। जैसे कि उपरोक्त तालिका क्रमांक– 4.3.5 में दिखाया गया है। यह त्रुटि विद्यार्थियों की लेखन में पायी गयी है।

निष्कर्ष–

निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि, अनावश्यक अक्षर एवं संयुक्ताक्षर की त्रुटि ज्यादा विद्यार्थी करते है,

- **योजक चिह्न की त्रुटि–**

योजक चिह्न सामान्यतः दो शब्दों को जोड़ता है और दोनों को मिलाकर एक समस्त पद बनाता है। विद्यार्थी लेखन करते समय योजक चिह्न का प्रयोग अनावश्यक तथा कभी–कभी चिह्न लगाना भूल जाते हैं। जैसे कि निम्नलिखित तालिका क्रमांक– 4.3.6 में दिखाया गया है। यह त्रुटि विद्यार्थियों की लेखन में पायी गयी है।

तालिका क्रमांक – 4.3.6

क्र.	सही शब्द	होने वाली त्रुटि	प्रतिशत
1.	खाना–पिना	खानापिना, खानापीना	70%
2.	राम–लक्ष्मण	राम लखन, राम लक्ष्मण	

निष्कर्ष–

निष्कर्ष रूप में यह कहाँ जाता है कि, योजक चिह्न का प्रयोग करते समय विद्यार्थी ज्यादा त्रुटियाँ करते है।

- **हलन्त की त्रुटि–**

जिस अक्षर के नीचे तिरछी रेखा लगाई जाती है उसे हलन्त कहते है। विद्यार्थी लेखन करते समय इस चिह्न का प्रयोग करने में अधिकांश अशुद्धि करते हैं। जैसे कि निम्नलिखित तालिका क्रमांक– 4.3.7 में दिखाया गया है। यह त्रुटि विद्यार्थियों की लेखन में पायी गयी है। ।

तालिका क्रमांक – 4.3.7

क्र.	सही शब्द	होने वाली त्रुटि	प्रतिशत
1.	श्रीमान्	श्रीमान,	10%
2.	मिट्टी	मिटटी	15%

निष्कर्ष–

निष्कर्ष रूप में यह कहाँ जाता है कि, हलन्त की त्रुटि विद्यार्थी करते है।

- **लिंग की त्रुटि–**

प्रायः विद्यार्थी के लिंग परिवर्तन करते समय पुल्लिंग की जगह स्त्रीलिंग एवं स्त्रीलिंग की जगह पुल्लिंग का लेखन करते

है। तथा लिंग में परिवर्तन नहीं करते है। जैसे कि निम्नलिखित तालिका क्रमांक– 4.3.8 में दिखाया गया है। यह त्रुटि विद्यार्थियों की लेखन में पायी गयी है।

तालिका क्रमांक – 4.3.8

क्र.	लिंग के प्रकार	होने वाली त्रुटि	प्रतिशत
1.	पुल्लिंग	सही–घोड़ा त्रुटि –घोड़ा सही –श्रीमान् त्रुटि– पुंरुषमान	10%
2.	स्त्रीलिंग	सही – रानी त्रुटि –रानी	10%

निष्कर्ष–

निष्कर्ष रूप में यह कहाँ जाता है कि, लिंग परिवर्तन करते समय विद्यार्थी पुल्लिंग तथा पुल्लिंग ही लिखते है एवं स्त्रीलिंग का स्त्रीलिंग ही लिखतें है।

- **वचन की त्रुटि**

विद्यार्थी लेखन करते समय वचन में त्रुटियाँ करते है। जैसे कि निम्नलिखित तालिका क्रमांक– 4.3.9 में दिखाया गया है। यह त्रुटि विद्यार्थियों की लेखन में पायी गयी है।

तालिका क्रमांक – 4.3.9

क्र.	वचन के प्रकार	होने वाली त्रुटि	प्रतिशत
1.	एकवचन	सही– फल– फल त्रुटि– फलो, फुल, सही– कवी– कवी, त्रुटि– कवियीमीयाँ, कवियों	45%
2.	बहुवचन	सही– लड़का	65%

		त्रुटि – लड़की, लडकियाँ सही –वस्तु त्रुटि– वस्तुयाँ सही – टोकरी त्रुटि – टोकरी	

निष्कर्ष–

निष्कर्ष रूप से यह कहाँ जाता है कि, विद्यार्थी एक वचन एवं बहुवचन में त्रुटियाँ करते है।

- **मातृभाषा शब्द का प्रयोग**

विद्यार्थी कभी–कभी अपनी बोलीभाषा एवं अपनी मातृभाषा शब्द का प्रयोग लेखन करते समय करता हैं। जैसे कि निम्नलिखित तालिका क्रमांक– 4.3.10 में दिखाया गया है। यह त्रुटि विद्यार्थियों की लेखन में पायी गयी है।

तालिका क्रमांक – 4.3.10

क्र.	मातृभाषा शब्द	प्रतिशत
1.	खतपानी, सारे, आहे वर्तमानपत्र, मच्छर, परिश्रम, कष्ट, झाड, पक्षी, फल, काढते, कौतुक, उठणें, एकर, गुरोढोंरों, नाही	70%

उपरोक्त मराठी शब्द है, इसका विद्यार्थियों ने अपने लेखन में प्रयोग किया।

निष्कर्ष–

निष्कर्ष रूप से यह कहाँ जाता है कि विद्यार्थी लेखन करते समय ज्यादातर अपनी मातृभाषा के शब्द का प्रयोग करते है। क्योंकि उनकी मातृभाषा का प्रभाव ज्यादा रहता हैं।